संपादकीय

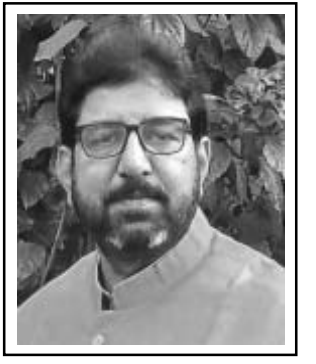

हर महीने की भाँति माह नवंबर में भी दर्जनों दिवस राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाए जाते हैं। दिवस मनाने की परंपरा कब से शुरू हुई, इसके बारे में इतिहास साफ तौर पर कुछ भी नहीं बता पाता, पर हाँ आज से लगभग 4000 साल पहले बेबीलोन की सभ्यता में नव वर्ष दिवस के रूप में प्रतिवर्ष उत्सव मनाने का उल्लेख मिलता है। इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं की स्मृति तथा अपना संपूर्ण जीवन समाज के लिए उत्सर्ग करने वाले तथा समाज का उचित मार्गदर्शन करने वाले महापुरुषों का अवतरण दिवस अथवा जन्मदिन मनाकर उनके त्याग, बलिदान तथा आदर्शों का स्मरण करते हुए, अनुकरण करने के संकल्प को दोहराने तथा उनके महत्त्वपूर्ण अवदानों के प्रति कृतज्ञ समुदाय के द्वारा कृतज्ञता ज्ञापन की बहुत प्राचीन परंपरा रही है। पिछले कुछ दशकों में राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक प्राथमिकताएँ तय करने व तत्संबंधी विभिन्न ऊर्ध्वगामी लक्ष्यों की पूर्ति हेतु विभिन्न प्रकार के दिवस बनाने की बाढ़ आई हुई है। हालात यह हैं कि साल के 365 दिन आरक्षित हो चुके हैं और अब तो एक-एक ही दिन में पाँच-पाँच राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय दिवस बनाए जा रहे हैं।

साहित्य की संसद में आलोचना प्रतिपक्ष की आवाज है

(शिक्षाविद एवं वरिष्ठ आलोचक **गोपेश्वर सिंह** से युवा आलोचक एवं समीक्षक **नीरज कुमार मिश्र** की बातचीत)

24 नंवबर 1955 को बिहार के गोपालगंज जिले के 'बड़का गाँव पकड़ीयार' नामक गाँव में एक किसान परिवार में गोपेश्वर सिंह का जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गाँव के पास वाले कस्बे हथुआ में और उच्च शिक्षा मुजफ्फरपुर, पटना और बनारस में हुई। जिस समय आलोचना में गतिरोध के प्रश्न उठाए जा रहे हों, ऐसे समय में गंभीर, बहुआयामी विचारों वाले गोपेश्वर सिंह सरीखे दृष्टिसंपन्न आलोचक का आना हमें ये विश्वास दिलाता है कि गतिरोध के प्रश्न बेमानी हैं। गोपेश्वर सिंह आलोचना को अध्यापक-जीवन की सार्थकता की खोज के रूप में देखते और परिभाषित करते हैं। उनकी आलोचना एकांगी नहीं, बल्कि समग्रतावादी है। वह मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक, कथा साहित्य से लेकर कविता तक तथा साहित्य से लेकर समाज में उठ रहे सवालों से लगातार टकराते हैं। हिंदी आलोचना की विरासत को आगे बढ़ाने और समृद्ध करने वाले आलोचकों में गोपेश्वर सिंह का नाम अग्रणी पंक्तियों में है।

प्रो. गोपेश्वर सिंह
मो. 88267-23389

साहित्य के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों पर महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में इनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। इनकी अब तक अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें प्रमुख हैं- 'नलिन विलोचन शर्मा' (विनिबंध), 'साहित्य से संवाद', 'आलोचना का नया पाठ', 'भक्ति आंदोलन और काव्य' और 'आलोचना के परिसर' तथा 'कल्पना का उर्वशी विवाद', 'भक्ति आंदोलन के सामाजिक आधार', 'शमशेर बहादुर सिंह : संकलित कविताएँ', 'नलिन विलोचन : रचना संचयन' आदि।

गोपेश्वर सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर पद पर रहते हुए विद्यार्थियों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। 30 नंवबर को वे अवकाश प्राप्त कर रहे हैं। यह साक्षात्कार साहित्य की उपयोगिता को ध्यान में रखकर लिया गया है। हम सबकी तरफ से उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ। वे हमेशा की तरह साहित्यिक और शारीरिक रूप से सक्रिय रहें।